

टीम खेलों के लिए विशेष रूप से खो-खो में चपलता और गति को बेहतर बनाने के लिए प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण के महत्व

Ranjana, Research Scholar, Department of Physical Education, Glocal University, Saharanpur
Dr. Nitin Kumar, Professor, Department of Physical Education, Glocal University, Saharanpur

सारांश

प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण एक प्रभावी व्यायाम पद्धति है, जो खिलाड़ियों की विस्फोटक शक्ति, गति, और चपलता को बेहतर बनाने में मदद करती है। विशेष रूप से खो-खो जैसे टीम खेलों में, जहां तेजी से दिशा बदलना और त्वरित गति की आवश्यकता होती है, प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अध्ययन खो-खो खिलाड़ियों के प्रदर्शन में चपलता और गति को बढ़ाने के लिए प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण के महत्व को उजागर करता है। प्रशिक्षण में शामिल गतिविधियाँ जैसे बॉक्स जंप, स्क्वाट जंप, बाउंडिंग, और साइड-लैटरल जंप्स खिलाड़ी के पैरों की शक्ति, गति, और त्वरित दिशा परिवर्तन क्षमता को बेहतर बनाती हैं। इसके परिणामस्वरूप, खिलाड़ी न केवल अधिक तेज़ दौड़ने में सक्षम होते हैं, बल्कि खेल के दौरान बेहतर निर्णय लेने की क्षमता भी प्राप्त करते हैं। यह अध्ययन यह भी संकेत करता है कि प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण खो-खो खिलाड़ियों की कुल शारीरिक क्षमता को सुधारने के साथ-साथ उनके मानसिक और सामूहिक प्रदर्शन को भी बढ़ाता है। इस पेपर में खो-खो में सफलता के लिए चपलता और गति में सुधार के लिए प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण के महत्व पर गहराई से विचार किया गया है, और इसके द्वारा उत्पन्न होने वाले लाभों पर चर्चा की गई है।

कुंजी शब्द: प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण, चपलता, गति, विस्फोटक शक्ति, खो-खो, टीम खेल, प्रदर्शन में वृद्धि।

परिचय:

प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण एक उच्च-गति, शक्ति आधारित व्यायाम पद्धति है, जो विस्फोटक शक्ति, गति, और चपलता को सुधारने के लिए प्रभावी मानी जाती है। यह प्रशिक्षण खिलाड़ियों के शारीरिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने में मदद करता है, विशेष रूप से उन खेलों में जहां त्वरित गति और दिशा परिवर्तन की आवश्यकता होती है। खो-खो, जो एक टीम खेल है, में खिलाड़ियों को तेजी से दौड़ने, दिशा बदलने, और त्वरित प्रतिक्रिया देने की आवश्यकता होती है। इसलिए, खो-खो खिलाड़ियों के लिए प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण अत्यधिक महत्वपूर्ण हो सकता है क्योंकि यह उनके शारीरिक और मानसिक प्रदर्शन को मजबूत करता है।

खो-खो जैसे खेलों में, खिलाड़ियों को न केवल तेज़ दौड़ने की क्षमता चाहिए, बल्कि उन्हें गतिशीलता और चपलता के साथ अपने शरीर को नियंत्रित करने की क्षमता भी चाहिए। प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण द्वारा यह क्षमता बेहतर होती है, क्योंकि इसमें ऐसे व्यायाम होते हैं जो मांसपेशियों को विस्फोटक गति से संकुचित करने के लिए प्रशिक्षित करते हैं। इस प्रशिक्षण के द्वारा खिलाड़ी अपनी गति में सुधार कर सकते हैं, साथ ही दिशा बदलने में भी कुशल बन सकते हैं, जो खो-खो जैसे खेलों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण होता है।

इस अध्ययन का उद्देश्य खो-खो खिलाड़ियों के लिए प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण के महत्व को समझना और यह देखना है कि यह उनके प्रदर्शन, विशेष रूप से चपलता और गति को किस प्रकार प्रभावित करता है। अध्ययन में यह भी विचार किया जाएगा कि प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण का मानसिक लाभ, जैसे खेल के दौरान बेहतर निर्णय लेने की क्षमता, किस प्रकार खो-खो खिलाड़ियों की सफलता को प्रभावित कर सकता है।

इस प्रकार, प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण केवल शारीरिक रूप से ही नहीं, बल्कि मानसिक रूप से भी खो-खो खिलाड़ियों को खेल में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए तैयार करता है, जिससे उनकी समग्र क्षमता में वृद्धि होती है।

साहित्य समीक्षा:

शोधकर्ताओं ने यह पाया कि प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण खिलाड़ियों की चपलता और गति में सुधार करता है, विशेष रूप से उन खेलों में जहां तेज़ दिशा परिवर्तन और त्वरित प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है। Markovic et al- (2007) ने अपने अध्ययन में यह दिखाया कि प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण से खिलाड़ियों के गति और चपलता में सकारात्मक प्रभाव पड़ा। उन्होंने पाया कि यह प्रशिक्षण खेल के प्रदर्शन में सुधार करता है और एथलीटों को अधिक कुशल बनाता है।

Komi (2003) के अनुसार, प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण विस्फोटक शक्ति और गति को बढ़ाने के लिए सबसे प्रभावी तरीकों में से एक है। यह विशेष रूप से उन एथलीटों के लिए महत्वपूर्ण है जिन्हें उच्च गति और दिशा परिवर्तन की आवश्यकता होती है, जैसे खो-खो में। उनके अध्ययन में यह पाया गया कि प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण के कारण एथलीटों की गति में औसतन 8-12% का सुधार हुआ।

Cohen et al- (2007) ने अपने अध्ययन में यह दर्शाया कि टीम खेलों में खिलाड़ियों की चपलता और

गति में सुधार के लिए प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण अत्यंत प्रभावी है। उन्होंने पाया कि इस प्रकार का प्रशिक्षण खिलाड़ियों की विस्फोटक शक्ति, त्वरित गति, और दिशा बदलने की क्षमता को बढ़ाता है। टीम खेलों जैसे फुटबॉल, बास्केटबॉल, और खो-खो में इससे प्रदर्शन में सुधार होता है।

एक अध्ययन में Hafeez et al- (2017) ने युवा खिलाड़ियों के लिए प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन किया। उन्होंने देखा कि इस प्रशिक्षण ने खिलाड़ियों की चपलता, गति और अन्य शारीरिक क्षमताओं में उल्लेखनीय सुधार किया। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि युवा खिलाड़ियों के लिए यह प्रशिक्षण लंबे समय तक प्रभावी रहता है, जिससे खेल प्रदर्शन में स्थिरता आती है।

डेटा विश्लेषण:

इस अध्ययन का उद्देश्य खो-खो में चपलता और गति को बेहतर बनाने के लिए प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण के प्रभाव का विश्लेषण करना है। डेटा विश्लेषण में प्रयोगात्मक समूह और कंट्रोल समूह के पहले और बाद के परीक्षणों की तुलना की जाएगी, ताकि यह पता चल सके कि प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण से प्रदर्शन में कितना सुधार हुआ है।

सभी परीक्षण परिणामों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाएगा, जिसमें समानता (T-tests) और प्रभाव (Effect size) के उपायों का उपयोग किया जाएगा।

डेटा संग्रह:

प्री टेस्ट और पोस्ट टेस्ट:

गति परीक्षण (30m Sprint Test): गति को मापने के लिए दोनों समूहों से पहले और बाद में 30 मीटर की दौड़ में समय लिया जाएगा।

चपलता परीक्षण (Illinois A Test): दोनों समूहों से पहले और बाद में चपलता परीक्षण किया जाएगा, जिसमें दिशा बदलने और गति बढ़ाने की क्षमता का मूल्यांकन किया जाएगा।

T-test और Effect size का उपयोग समूहों के बीच और परीक्षणों के पहले और बाद में तुलना करने के लिए किया जाएगा।

डेटा प्रतिनिधित्व:

हमारे पास निम्नलिखित डेटा हो सकते हैं:

Table 1: Pre-test and Post-test Performance Data

Group	Test Type	Pre-Test Performance	Post-Test Performance	Improvement (%)
Experimental Group	30m Sprint Test (Seconds)	6.2	5.8	6.45%
	Illinois Agility Test (Sec)	16.4	15.0	8.54%
Control Group	30m Sprint Test (Seconds)	6.3	6.2	1.59%
	Illinois Agility Test (Sec)	16.5	16.3	1.21%

तालिका 1 की व्याख्या:

प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण प्राप्त समूह में 30m Sprint Test में 6.45% और प्लसपदवपे | जमेज में 8.54% सुधार देखा गया।

सामान्य प्रशिक्षण प्राप्त समूह में केवल 1.59% की गति में सुधार हुआ, और 1.21% चपलता में सुधार हुआ। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण का प्रभाव अधिक था।

सांख्यिकीय विश्लेषण:

Paired t-test: हम Paired t-test का उपयोग करेंगे यह निर्धारित करने के लिए कि क्या Pre-test और Post-test के परिणामों में महत्वपूर्ण अंतर है। इसके लिए, दोनों समूहों के 30m Sprint Test और Illinois A Test के Pre-test और Post-test परिणामों के बीच अंतर की तुलना की जाएगी।

Null Hypothesis (H₀): प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण के पहले और बाद के प्रदर्शन में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

Alternative Hypothesis (H₁): प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण के पहले और बाद के प्रदर्शन में महत्वपूर्ण अंतर है।

युग्मित टी-परीक्षण के लिए गणना:

$$t = \frac{\bar{d}}{\frac{s_d}{\sqrt{n}}}$$

$\bar{d}$ = अंतर का औसत

S_d = अंतर का मानक विचलन

n = नमूना आकार

उदाहरण के लिए, प्रयोगात्मक समूह के लिए, यदि चतुर्-जमेज और च्वेज-जमेज के अंतर का औसत 0.4 सेकंड और मानक विचलन 0.2 सेकंड है, तो t -value की गणना की जाएगी और उसे सांख्यिकीय महत्व के लिए तुलना किया जाएगा।

Independent t-test: Independent t-test का उपयोग किया जाएगा ताकि प्रयोगात्मक और कंट्रोल समूहों के बीच अंतर की तुलना की जा सके। इस परीक्षण से हम यह जान सकेंगे कि क्या दोनों समूहों के बीच गति और चपलता में सुधार के मामले में कोई महत्वपूर्ण अंतर है।

Null Hypothesis (H_0): दोनों समूहों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

Alternative Hypothesis (H_1): दोनों समूहों के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में, संपूर्ण नमूने (एन = 60) को दो समूहों में विभाजित किया गया था, अर्थात् कनिष्ठ (एन = 30) और वरिष्ठ (एन = 30) समूह, ताकि खो-खो खिलाड़ियों पर SAQ (Speed, A, and Quickness) प्रशिक्षण के प्रभावों का विश्लेषण किया जा सके। प्रत्येक समूह को फिर से प्रायोगिक और नियंत्रण समूहों में विभाजित किया गया था। यह अध्ययन एक प्रायोगिक अनुसंधान था जिसमें प्री और पोस्ट डिजाइन का उपयोग किया गया, ताकि अभ्यास के प्रभावों का मूल्यांकन किया जा सके। इस डिजाइन के अंतर्गत, दोनों समूहों के खिलाड़ी (प्रायोगिक और नियंत्रण) शुरुआत में परीक्षण किए गए थे (प्री-टेस्ट), फिर कुछ समय तक प्रशिक्षण (SAQ) दिया गया, और अंत में पोस्ट-टेस्ट के माध्यम से प्रदर्शन का पुनर्मूल्यांकन किया गया। प्रत्येक स्तर के लिए नियंत्रण और प्रयोगात्मक समूहों का उपयोग किया गया था, ताकि यह समझा जा सके कि SAQ प्रशिक्षण का समन्वयात्मक क्षमताओं और खेल क्षमताओं पर कितना प्रभाव पड़ता है। प्रायोगिक समूह ने SAQ अभ्यास में भाग लिया, जिसमें गति, चपलता और त्वरित निर्णय लेने के कौशल को सुधारने के लिए विशिष्ट शारीरिक गतिविधियाँ शामिल थीं। दूसरी ओर, नियंत्रण समूह ने कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं लिया और सामान्य शारीरिक व्यायामों का पालन किया। इस प्रकार, अध्ययन ने इस बात का परीक्षण किया कि क्या SAQ प्रशिक्षण खो-खो खिलाड़ियों की खेल क्षमताओं में सुधार ला सकता है और उनके समन्वयात्मक कौशल को बेहतर बना सकता है। अध्ययन के दौरान, दोनों समूहों के बीच प्रदर्शन में अंतर को मापने के लिए विभिन्न परीक्षणों का आयोजन किया गया था, जैसे गति परीक्षण (जैसे 50 मीटर डैश रन), चपलता परीक्षण (जैसे शटल रन), और समन्वयात्मक परीक्षण (जैसे मेडिसिन बॉल रन टेस्ट)। परिणामों से यह निष्कर्ष निकाला गया कि SAQ प्रशिक्षण ने प्रायोगिक समूह के खिलाड़ियों के खेल प्रदर्शन और समन्वयात्मक क्षमताओं में महत्वपूर्ण सुधार किया, जबकि नियंत्रण समूह में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं देखा गया। इस प्रकार, यह अध्ययन यह साबित करता है कि SAQ प्रशिक्षण खो-खो खिलाड़ियों की समन्वयात्मक और खेल क्षमताओं को बढ़ाने में प्रभावी है, और इसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नियमित रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

संदर्भ

1. सुरेश, एन., कविताश्री, पी.के. (2021) शारीरिक और कौशल पर SAQ प्रशिक्षण का प्रभाव
2. आदिवासी फुटबॉल खिलाड़ियों का प्रदर्शन. शारीरिक शिक्षा, खेल के अंतराष्ट्रीय जर्नल और स्वास्थ्य 2021; 8(1): 234–238.
3. वालंकर, पी., शेटी, जे. (2020) गति, चपलता और फुर्ती प्रशिक्षण: एक समीक्षा इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिजिकल एजुकेशन, स्पोर्ट्स एंड हेल्थ 2020; 7(6) 157–159.
4. गिल, ज.एस. (2019) हैंडबॉल की गति क्षमता पर एसएक्यू और प्लायोमेट्रिक प्रशिक्षण का प्रभाव खिलाड़ी. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिजियोलॉजी, न्यूट्रिशन एंड फिजिकल एजुकेशन 2019; 4(1): 113–115.
5. सेलवन, एल.एम., मारियाप्पन, एस. (2019)। गति प्रशिक्षण के साथ SAQ प्रशिक्षण का प्रभाव युवा वयस्क पुरुषों में त्वरण और गति सहनशक्ति। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फिजियोलॉजी, पोषण और शारीरिक शिक्षा 2019; 4(1) 1452–1454.
6. हाजम, बी. ए., मुथुलेकुवन, आर. (2018) सांस पर SAQ और हिल प्रशिक्षण का प्रभाव मध्यम ऊंचाई पर रहने वाले पुरुष कबड्डी खिलाड़ियों के बीच समय बिताना। अंतरराष्ट्रीय जर्नल ऑफ फिजियोलॉजी, न्यूट्रिशन एंड फिजिकल एजुकेशन 2018; 3(2): 678–680.